समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

विद्यार्थी विशेषांक

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ अप्रैल २०२३ • वर्ष : २६ • अंक : १० (निरंतर अंक : ३१०) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

लीलारामजी ने २० वर्ष की आयु में परमात्मा को पा लिया ।

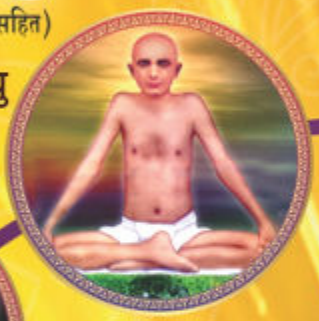

आसुमलजी ने अल्पायु में ही परमात्मप्राप्ति के लक्ष्य को पा लिया और पिछले ६० वर्षों से संत आशारामजी के रूप में विश्व-मांगल्य में रत हैं ।

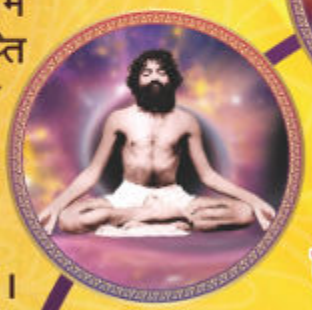

ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनमें सत्संग और आत्मविश्वास - इन २ सूत्रों का अवलम्बन लेकर बच्चे सफलता के चरम शिखर (परमात्मप्राप्ति) तक पहुँच गये ।

पढ़ें पृष्ठ ८

श्रीरामचन्द्रजी को १६ वर्ष की आयु में वैराग्य होकर आत्मानुभव हो गया ।

सफलता के २ सोपान
सुसंस्कार और आत्मविश्वास

बालक शंकर ७ वर्ष की उम्र में वेदों में पारंगत हो गये ।

ज्ञानेश्वरजी ने १५ साल की उम्र में गीता पर प्रसिद्ध टीका लिख डाली ।

स्मृति व बुद्धि को विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न करने हेतु करें ये प्रयोग पढ़ें पृष्ठ १३

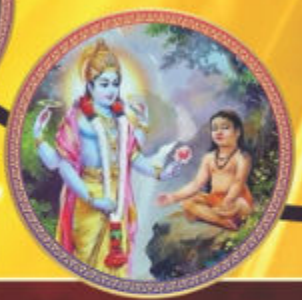

५ साल के ध्रुव ने विश्वनियंता को प्रकट कर दिया ।

Subramanian Swamy
@Swamy39

Asaram Bapu has suffered this bogus case because of three highly placed politicians: Two from Gujarat and one from Italy.

तीन उच्च पदस्थ राजनेताओं के कारण आसाराम बापू को यह फर्जी मामला झेलना पड़ा है : दो गुजरात से और एक इटली से । - प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति हेतु ६ | छोटी-छोटी ईमानदारियों का फल १० | गुरुकृपा व दैवी चिकित्सा का हैरतअंगेज करिश्मा ११

अब आप भी इस स्वर्णिम सुअवसर से हो सकते हैं लाभान्वित

पा सकते हैं दिव्य प्रसाद व दुर्लभ मालाएँ

पूज्य बापूजी के अमृतवचन : ''रुद्राक्ष माला की बड़ी भारी महिमा है। महर्षि वेदव्यासजी ने कहा है : 'रुद्राक्ष की माला धारण करनेवाला मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ होता है। इसे धारण करके पुण्यकर्म करनेवाला अक्षय फल का भागी होता है।' रुद्राक्ष दीर्घायु-प्रदायक एवं स्वास्थ्य-हितकर गुणों से भरपूर है। तुलसी के काष्ठ के दानों की माला गले में पहनकर जो ध्यान, जप, पूजन, तर्पण करता है उसके उन शुभ कर्मों का फल करोड़ गुना हो जाता है। कितनी सारी बीमारियों की जड़ें तो तुलसी की कंठी धारण करनेमात्र से दूर हो जाती हैं।''

लोक कल्याण सेतु के पुण्यात्मा सेवाधारियों व सौभाग्यशाली सदस्यों को पूज्य बापूजी के पावन करकमलों से स्पर्शित, मंगलमय दृष्टि से पावन तथा कल्याणकारी संकल्पों से सम्पन्न रुद्राक्ष मनके (रक्षासूत्र) एवं प्रसाद दिये जायेंगे। नीचे दी गयी योजना में सहभागी हो आप भी उठा सकते हैं इस सुनहरे अवसर का लाभ !

कैसे पायें यह लाभ : (१) लोक कल्याण सेतु के सेवाधारियों के लिए : २५ सदस्य बनाने अथवा २५ पत्रिकाएँ प्रतिमाह (कम-से-कम १ वर्ष तक) मँगवाने पर पूज्यश्री से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका (रक्षासूत्र) तथा प्रसाद भेंटस्वरूप में दिये जायेंगे एवं ५० सदस्य बनाने या ५० पत्रिका प्रति माह (कम-से-कम १ वर्ष तक) मँगवाने पर तुलसी माला एवं पूज्यश्री से स्पर्शित प्रसाद भेंटस्वरूप में दिये जायेंगे।

(२) लोक कल्याण सेतु के सदस्यों के लिए : लोक कल्याण सेतु की आजीवन सदस्यता (१२ वर्ष) पर रुद्राक्ष करमाला एवं पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित प्रसाद दिये जायेंगे।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : लोक कल्याण सेतु कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-५
दूरभाष : (०७९) ६१२१०७३९/८३९, वॉट्सएप नं. : ०७९६१२१०७३९

पुण्यात्मा प्रसादरूप में पा रहे हैं रुद्राक्ष मनके एवं करमालाएँ, तुलसी मालाएँ तथा प्रसाद

लोक कल्याण सेतु के सदस्य बनने के लिए अपने नजदीकी आश्रम में सम्पर्क करें अथवा इंटरनेट के द्वारा आप कहीं से भी इसकी ई-मैगजीन तथा मुद्रित प्रति के सदस्य बन सकते हैं। बस, www.lokkalyansetu.org खोलें और subscribe पर क्लिक करें।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : १० (निरंतर अंक : ३१०)
प्रकाशन दिनांक : १५ अप्रैल २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- अपने जीवन में ओजस्विता-तेजस्विता भर दो !.....४
- वास्तविक संजीवनी.....५
- माँ का यह वाक्य मैं कभी नहीं भूला..... ६
- ऐसे महापुरुष परिस्थितियों को रोक सकते हैं.....७
- विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति हेतु..... ८
- कहीं आप अमृत दे के विष तो नहीं ले रहे ?.....८
- श्रद्धा, भक्ति व ध्यान का तात्त्विक विवेचन - स्वामी अखंडानंदजी..... ९
- सफलता के २ सोपान : सुसंस्कार और आत्मविश्वास.....११
- छोटी-छोटी ईमानदारियों का फल.....१४
- गुरुकृपा व दैवी चिकित्सा का हैरतअंगेज करिश्मा - रिंकु दलाल.....१५
- अंत्येष्टि संस्कार क्यों ?.....१६
- स्मृति व बुद्धि को विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न करने हेतु करें ये प्रयोग.....१८
- शरणागत को स्वीकार किया करते हैं..... २१
- सफलता की तीन शर्तें - स्वामी रामतीर्थजी.....२३

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अनादि
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

Asharamji Bapu
सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

वास्तविक संजीवनी

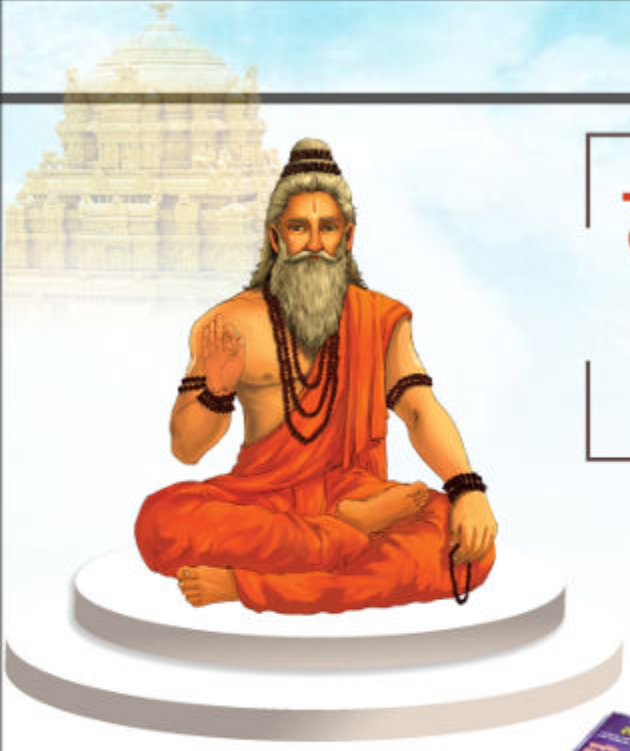

ईरान के बादशाह नशीखान ने संजीवनी बूटी के बारे में सुना। उसने अपने प्रिय हकीम बरजुए से पूछा : ''क्या तुमने भी कभी संजीवनी बूटी का नाम सुना है ?''

हकीम : ''जी बादशाह सलामत ! यह हिन्दुस्तान की एक मशहूर बूटी है, जो मुर्दे को भी जिंदा कर देती है।''

''तुम हिन्दुस्तान जाकर उस बूटी को इस मुल्क में ले आओ।''

हकीम हिन्दुस्तान आकर संजीवनी की तलाश में खूब घूमा। कई जगह गया। यहाँ का रहन-सहन, सांस्कृतिक रीति-रिवाज, किसी भी जीव को दुःख न देने की भावना, आपसी सहयोग व परोपकार की भावना से ओतप्रोत व्यवहार ने उसे बहुत प्रभावित किया। उसे हिन्दुस्तान में जो-जो बेशकीमती लगा वह उसे ईरान ले जाने के लिए इकट्ठा करता गया।

अपनी खोज पूरी करने के बाद बरजुए अपने वतन पहुँचा। जब वह दरबार में पहुँचा तो बादशाह ने बड़ी उत्सुकता से पूछा : ''बरजुए ! जल्दी दिखाओ, कहाँ है वह संजीवनी बूटी जो तुम्हें इतने दिनों तक हिन्दुस्तान के चप्पे-चप्पे की सैर करके बड़ी मेहनत से मिली है ?''

हकीम ने बेशकीमती हीरे-मोतियों से जड़ित एक सजा-धजा चंदन का संदूक पेश किया। बादशाह नशीखान की उत्सुकता अब सातवें आसमान को छूने लगी। वह तख्त से उठकर स्वयं उस संदूक को खोलने के लिए उसके पास पहुँचा। उसने वह संदूक खोला तो देखा कि उसमें रेशम के वस्त्रों में लपेटकर कुछ वस्तुएँ रखी हुई हैं। उसने कहा : ''बरजुए ! तुम तो एक बूटी लाने गये थे... लेकिन लगता है तुम्हें तो उसका खजाना ही हाथ लगा है ! अब तुम्हें ही अपने पाक हाथों और जबान से इसका राज खोलना पड़ेगा।''

बरजुए ने संदूक से एक-एक उपहार बाहर निकालते हुए कहा : ''बादशाह सलामत ! यही है वह संजीवनी बूटी ! ये वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता और संतों की वाणियाँ... इन्हींमें सिमटी हुई है मौत

ऐसे महापुरुष परिस्थितियों को रोक सकते हैं

- पूज्य बापूजी

संत कबीरजी जयंती : ४ जून

एक बार संत कबीरजी जगन्नाथपुरी में गये। वहाँ उस समय का राजा जगन्नाथजी के मंदिर का निर्माण करवा रहा था। परंतु समुद्र की तरंगें सारी निर्माण-सामग्री को तितर-बितर करके बहा ले जाती थीं। राजा बहुत दुःखी हुआ। राजा ने कारीगरों को खूब आजमाया। उस जमाने के कारीगर और इंजीनियर जो भी होंगे, उन्होंने खूब प्रयास किया। राजा ने खूब सम्पत्ति खर्च की परंतु काम नहीं बन रहा था। राजा संत कबीरजी की शरण गया। कबीरजी ने देखा कि 'राजा बड़ी श्रद्धा से ठाकुरजी का मंदिर बनवा रहा है तो इस बहाने लोगों का कुछ-न-कुछ भाव विकसित होगा, बहिर्मुख वातावरण वाले लोगों को कुछ-न-कुछ उपासना की पद्धति मिल जायेगी।'

तो कबीरजी ने वहाँ रेखा खींच दी और चबूतरा बनवाकर उस पर बैठ गये। समुद्र का पानी उस रेखा से आगे नहीं बढ़ा। निर्माण-कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जो अपने-आपमें स्थित हो गये हैं वे परिस्थितियों को रोक सकते हैं।

राजा बहुत प्रसन्न हुआ, उसके मन में कबीरजी के लिए आदरभाव हुआ। आज भी कबीरजी का चबूतरा 'कबीर चौरा' के नाम से उस जगह पर है।

श्रद्धा, भक्ति व ध्यान का तात्त्विक विवेचन

- स्वामी अखंडानंदजी

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि व्यक्ति प्रत्यक्ष हो सकता है लेकिन वे महात्मा हैं – यह श्रद्धा का विषय है अर्थात् श्रद्धा प्रत्यक्ष पर नहीं, परोक्ष पर होती है। अब आगे...)

किसीने कहा : 'महाराज ! हम आपको प्रत्यक्ष देख रहे हैं।' अरे बाबा ! तू हड्डी–मांस–चाम को देख रहा है या महात्मा को ? महात्मा तो तेरी मानसमूर्ति है, ऐन्द्रियक नहीं । श्रद्धा से यह मानसमूर्ति हुई और भक्ति से उनकी सेवा हुई।

हमारे पास बड़े–बड़े समझदार लोग आते हैं। हम समझदार को बुद्धि–सागर ही बोलते हैं। वे कहते हैं : 'वर्तमान युग में तो हमारे गुरु बनाने लायक कोई है नहीं और है नहीं तो बनायेंगे नहीं। तब हम वसिष्ठजी, सनत्कुमारजी आदि जो अमूर्त महात्मा हैं उनको गुरु बनायेंगे।'

एक बात आप निश्चय कर लीजिये कि जो परोक्ष गुरु हैं – वसिष्ठजी, सनत्कुमारादि रूप, उनकी आप उपासना कर सकते हैं, उनका ध्यान कर सकते हैं, आपके हृदय में प्रेम भी आ सकता है परंतु वे ज्ञान आपको उतना ही दे सकते हैं जितना

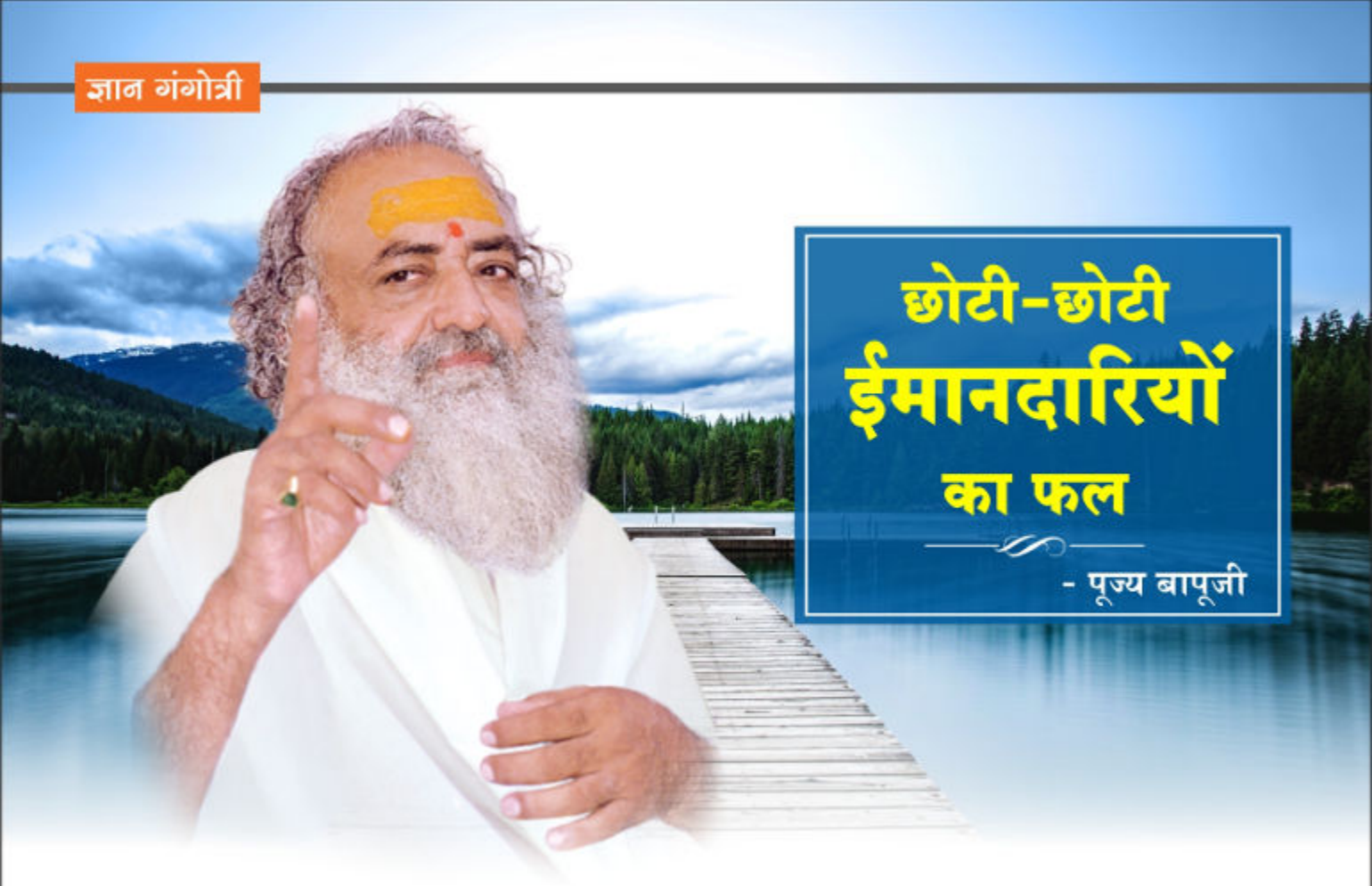

छोटी-छोटी ईमानदारियों का फल

- पूज्य बापूजी

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥

जो पुरुषार्थी है, आलसी नहीं है, पलायनवादी नहीं है, नकारात्मक विचारवाला नहीं है, उद्यमी है, जिसके जीवन में साहस है, जिसके जीवन में धैर्य है, बुद्धि है, शक्ति है, पराक्रम है, जो अच्छे कर्म और अच्छे विचार करता है ऐसे व्यक्ति को भगवान और देवता भी सहायता करते हैं। वातावरण में से भी सहायता मिलती है।

अब्राहम नामक एक लड़के को घर में गरीबी होने से दुकान पर काम करना पड़ा। एक बार एक महिला ने आधा सेर चाय माँगी तो उसने जल्दी-जल्दी में उसको पाव सेर ही दी। बाद में रात को हिसाब किया तो याद आया कि 'मैंने उससे आधे सेर के पैसे लिये और चाय पाव सेर ही दी है।' वह लड़का तुरंत ही उठा, रात्रि को पहाड़ी रास्ते से ५ मील पैदल चलकर उस माई को पाव सेर चाय और दे आया कि ''जल्दी-जल्दी में मैंने आधे सेर के बदले पाव सेर चाय आपको दी है; मेरी गलती है, आप मुझे माफ करो। मैं आपको यह एक पाव चाय और देने आया हूँ।''

लिंकन की सच्चाई पर माई के हृदय से आशीर्वाद निकला।

अन्य एक बार किसी माई से दुकानदारी में गलती से ज्यादा पैसे ले लिये। लिंकन को ध्यान में आया, वह लड़का इतना सच्चा कि अँधेरी रात में ३ मील चलकर उस माई को सवा ६ सेंट (किसी भी देश की मुद्रा या करेंसी का १००वाँ भाग) दे के आया फिर उसे आराम की नींद आयी।

वही लड़का आगे चलकर अमेरिका का राष्ट्रपति बना और प्रसिद्ध मानवतावादी के रूप में उसकी कीर्ति फैली। जिसके जीवन में सच्चाई-ईमानदारी और सूझबूझ है वह अवश्य महान बनता है। किंतु ध्यान दें, नश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करोगे तो नश्वर फल मिलेगा और शाश्वत की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करोगे तो शाश्वत फल मिलेगा।

तो बच्चों में तो ईमानदारी होती है लेकिन बेईमानों का संग करने से बेईमान बन जाते हैं, दुष्टों का संग करने से दुष्ट हो जाते हैं और

स्वास्थ्य प्रसाद

स्मृति व बुद्धि को विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न करने हेतु

..... करें ये प्रयोग .....

दैनंदिन जीवन के क्रिया-कलापों में सुविकसित स्मरणशक्ति का होना खूब महत्त्व रखता है । विद्यार्थी-जीवन में तो तीव्र स्मरणशक्ति का विशेषरूप से महत्त्व है । इसके बिना विद्यार्थी किसी भी प्रकार की पढ़ाई में सफल नहीं हो सकते । स्मृति व बुद्धि शक्ति का विकास करना हो तो विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों को अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए :

(१) मन की प्रत्येक इच्छा के पीछे उचित-अनुचित, हितकर-अहितकर का विचार करना।

(२) एकांत में ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों द्वारा बताये गये शास्त्रों का अध्ययन करना।

(३) कोई आध्यात्मिक ग्रंथ उतना ही उत्तम दिखता है जितनी बुद्धि में समझने की योग्यता होती है। अतः ग्रंथों का अध्ययन करके मनमाना अर्थ न लगाकर श्रद्धापूर्वक वेदांत के अनुभवी महापुरुषों का सत्संग-मार्गदर्शन पायें तथा उनके सिद्धांत को समझनेवालों और उस पर चलनेवालों का संग करें । इससे विचारशक्ति, विवेकशक्ति, स्मृतिशक्ति बढ़ेगी।

(४) प्रत्येक कार्य के पीछे कारण की खोज तथा गुण-दोष की छानबीन एवं तर्क द्वारा प्रत्येक प्रचलित परम्परा के पीछे छुपे सत्य की खोज करना। इससे बुद्धि में विवेक का प्रकाश होता है।

(५) आत्मस्मृति में जगे हुए अर्थात् ब्रह्मानुभवी सद्गुरु के मार्गदर्शन या सिद्धांत अनुसार सभी कार्य करना । इससे बुद्धि की योग्यता और स्मृति का सुविकास होता है।

सेवा

नोटबुक व रजिस्टर

कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों की सुंदर अभिव्यक्ति

क्या है इनमें खास ?

✲ संयम, सदाचार, आत्मज्ञान, भक्ति, उद्यम, कर्तव्यपालन आदि सद्गुणों से जीवन को ओतप्रोत करनेवाले पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत ✲ हर पृष्ठ पर प्रेरणादायी सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव आदि सुसंस्कारों से भर दें ✲ मनोबल, बुद्धिबल व स्वास्थ्यबल बढ़ाने के सचोट उपाय ✲ एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने की कुंजियाँ ✲ परीक्षा में सफल होने के उपाय ✲ चित्त में प्रसन्नता, उत्साह, आनंद व जीवनीशक्ति वर्धक दृश्य, तस्वीरें तथा सांस्कृतिक प्रतीक ।

विद्यार्थियों को इन नोटबुकों से सहज में ही मिलेंगे सुसंस्कार व सही दिशा ।
आम नोटबुकों पर छपनेवाली जीवनीशक्ति-विनाशक सामग्री से कोमलचित्त बच्चों को बचायें ।

लाँग नोटबुक ९६ पेज	₹ २०	लाँग नोटबुक २४८ पेज	₹ ६५	A4 लाँग रजिस्टर १९६ पेज	₹ ७५
लाँग नोटबुक १२८ पेज	₹ ३०	A4 लाँग रजिस्टर ९६ पेज	₹ ३५	A4 लाँग रजिस्टर २९२ पेज	₹ ११०
लाँग नोटबुक १७६ पेज*	₹ ४५	A4 लाँग रजिस्टर १६० पेज	₹ ६०	A4 लाँग रजिस्टर ३८८ पेज	₹ १५०

✲ 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' 2 Line, 4 Line व 3 in 1 में भी उपलब्ध है ।

सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग) Visit: https://asharamjibapu.org/notebooks

आँवला पाउडर

बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

यह यौवन को स्थिर रखनेवाली, वीर्यवर्धक, नेत्रों के लिए हितकर, स्मृति-बुद्धिवर्धक, त्वचा के रंग में निखार लानेवाली तथा हड्डियों, दाँतों व बालों को मजबूत बनानेवाली एवं रोगप्रतिकारक शक्तिवर्धक महत्त्वपूर्ण औषधि है ।

यह भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, खून की कमी, स्वप्नदोष तथा वीर्य-संबंधी रोगों में लाभप्रद है ।

कर्ण बिंदु

यह कान का दर्द, उसमें सूजन व खुजली होना, कानों में सतत भनभनाहट की ध्वनि सुनाई देना (tinnitus) आदि समस्याओं में लाभकारी है । इसका उपयोग वृद्धावस्था तक श्रवणशक्ति को ठीक बनाये रखने में सहायक होता है ।

गर्मी से राहत दिलानेवाले स्वास्थ्यवर्धक शरबत

हर घूँट में मधुरता व शक्ति का एहसास

गुलाब शरबत : सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला । **पलाश शरबत :** जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला । **ब्राह्मी शरबत :** स्मरणशक्तिवर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

महिला उत्थान मंडल ने पूज्य बापूजी की रिहाई हेतु देशभर में निकालीं संस्कृति रक्षा यात्राएँ व सौंपे ज्ञापन

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

महिला उत्थान मंडल द्वारा भोजन-प्रसाद, कम्बल, शरबत तथा विद्यार्थियों में नोटबुक वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी